

काशीअ में करतारु

६८

नवद्वीप खां गया घुमीं, आया काशीअ कृपा निधान ।
 सुखी रहनि सुहाग सां, साईं सन्त सुजान ॥
 वाह काशी विश्वनाथ पुरि, शंकर खे प्यारी ।
 भगुवन्त हृदय विराजती, सदां सोभारी ॥
 पावनु सुरसरि तीर ते, सन्तनि सुखकारी ।
 मुक्ति सदावृतु जिति दिऐ, भोलानाथु भण्डारी ॥
 अन्नपूर्णा अमड़ि जी, उते कीरति उजियारी ।
 कबीर हैं रविदास जी, जन्म भूमी प्यारी ॥
 गुरु रामानन्द भक्ति जे, रस सां सींगारी ।
 अहिड़ी अनूपम पुरीअ खे, करियूं वन्दनु लख वारी ॥
 साईं बि आया घणी सिक सां, वठी संगति सारी ।
 पाण्डे जी धर्मशाल में, कयो आसणु अवतारी ॥

सुरसरि मीर जो सैरु करे, माणी बाबल बहारी ।
 दान दिए दिलिड़ी वठे, दीननि दातारी ॥
 कदहिं .बुधनि वेही कुरिब सां, कीर्तन किलकारी ।
 कदहिं तारीनि दोनां गुलनि जा, गंगा मंझारी ॥
 रिमिझिमि लहिरियुनि जी दिसी, कनि गीतड़े गुंजारी ।
 सुखिड़ो पी सांवल जी, कनि सुरिति संभारी ॥
 ओरुं ओरींनि अजीब जूं, मचे आनन्दु अपारी ।
 सदां हर्षनि हुबकारी, साई साहिब सत्संग में ॥

६६

जीवन आधार निर्मल धणी, साहिब सोभिया सीव ।
 पावनु प्रेम भगति जी, कई दृढु जिनि नीव ॥
 सो साहिबु सतिगुरु सचो, बापू ब्राझारो ।
 शरण पालु समर्थु सदा, मालिकु मनठारो ॥
 विश्वनाथ दर्शन लाइ, होतु हलियुमि हिक वार ।
 प्यार सां दर्शनु कयो, श्री शंकर त्रिपुरारि ॥
 प्रसन्नु थी प्रीतम खे, दिनो राम रसनि जो दानु ।
 सदां श्री मैगसिचन्द्र ते, आहे, महादेवु महरिबानु ॥
 नितु मनाईनि नेह सां, आङ्कुरि लिंगु ठाहे ।
 सत्संग में बि शंकर खे, नितु मालिकु मनाए ॥
 घर घर में शंकर जी, पूजा सभई कनि ।
 भक्तीअ जो दातारु आ, इऐं साई नितु चवनि ॥

सदाई साहिबु करे, शंकर जी साराह ।
 तदहिं त शंकर खे थियो, बाबल मिलण उमाह ॥
 शंकर ऐं साहिब जी, आहे भेटिडी निराली ।
 ब्रई भक्ति भण्डार हिनि, दिलि महबत मतिवाली ॥
 ब्रई ज्ञान भक्ति जा, पूर्णु आहिनि नेता ।
 ब्रई पूर्णु प्रेम निधि, ब्राहिरि चित चेता ॥
 ब्रई कथा जा कोदिया, ब्रई विरुंह जा वीझार ।
 ब्रई रस जे राज में, मगनु आहिनि मनठार ॥
 ब्रई अमरु आनन्द में, अविचन रातियूं दीहैं ।
 ब्रई कोमल कुसुम जियां, ब्रई श्रद्धा शीह ॥
 ब्रई दुलारा श्रीराम जा, ब्रई नेही नाम ।
 ब्रई जागाईनि जीवनि खे, देई अन्दरि आराम ॥
 ब्रई वैरागी विषय खां, बिन्हीं जीतियो काम ।
 ब्रई भंगिडी पी भाव में, दियनि पिरियनि पैगाम ॥
 हिक खे त्रिशूलु हथनि में, बियो खुरिपे खेल करे ।
 हिकु भस्मु लगाए भाल ते, बियो बृज रज शीश धर ॥
 ब्रई रसीला रस निधि, ब्रई अवठर दानी ।
 ब्रई सन्तनि सन्मानु कनि, रही पाण त अमानी ॥
 शंकरु सतिगुरु रूपु आ, सतिगुरु शंकर रूपु ।
 जाहिरु कयाऊं जगत में, सत् अनुरागु अनूपु ॥
 भंगिडी पियारे भोलानाथ खे, कयो प्रसन्न बाबल शेर ।
 महादेव भी महिर मां, दिनां आशीषुनि ढेर ॥

उतां आयुमि अलबेलड़ो, श्री भैरव जे दरिबार ।
 विनय करे वन्दनु कयो, सब्बाझी सरकार ॥
 तेल ऐं फूलनि जी उते, भेटिड़ी धरियाऊँ ।
 जुगल धणियुनि जे कुशल जी, आशीश घुरियाऊँ ॥
 सभु देव मनाईनि दिलि सां, साईं शील निधान ।
 सत्संग जा सुलितान, घुमीं आयमि घर में ॥

१००

कबीर साहिबु काशीअ रहे, सत् नाम नगर वासी ।
 गुरु रामानन्द महिर सां, लधो आनन्दु अविनाशी ॥
 जोगियुनि जतियुनि सिद्धनि खां, जहिं अवस्था ऊँची ।
 टिनि गुणनि खां पारि थी, जीती माया समूची ॥
 कलिजुग में प्रह्लाद सम, सन्तनि साख चई ।
 मिली अभेदु थिया पाण में, श्रीरामु कबीरु बई ॥
 उन महापुरुष दर्शन लाइ, थी अबल चित उकीर ।
 कही आया कुरिब मां, मीरपुर जा मीर ॥
 महबबत सांणु मन्दिर में, अची मथिड़ो टेकियाऊँ ।
 माल्हा चाड़िहे चरणनि में, जै जसु चयाऊँ ॥
 चंवरु ढोरीनि चाह मां, पूर्ण पुरुषु मजी ।
 जो दिलिबर सां दाइमु मिलियो, अविद्या भिति भजी ॥
 कुरिब निकेत जे कुरिब जी, मां गाल्हि कयां केही ।
 भाव भिजी भीड़ दियनि, चरणनि वटि वेही ॥

सन्त चरणनि प्रीति कनि, से प्राणनि खां प्यारा ।
 गूजनि बाबल कननि में, (श्री) राम वचन उदारा ॥
 ब्राहिरि महन्तु मन्दिर जो, तहिं मिली करिनि विरुंह ।
 साईं साहिबु सिन्धु जो, सत्संगति जी सँह ॥
 महन्त चयो कबीरु साहिबु, आहे विषय वैरागी ।
 लोई बि चरणनि चेलिड़ी, नाहे पत्नी सभागी ॥
 साईं चवनि गृहस्थ में, जो अचलु अनुरागी ।
 जहिं विषय विघ्न छा कंदी, जिनि दिठो प्रभू जागी ॥
 इन्हींअ में पाण अधिक आ, महिमा महद् जननि ।
 घर जे घूमण घेर में, बि लालन लालु रहनि ॥
 सन्तनि सापुरुषनि जी, साईं विन्दुर में वरितनि ।
 सत्संग नाम जे रंग जो, दिनो दांणु ददनि ॥
 पोइ ब्रेड़ीअ चड़िही बाबल मिठा, आया तुलसीअ चौबारे ।
 असी घाट गंग तीर ते, साईं सुकुमारे ॥
 प्रीति मंझा प्रणामु कयो, मन्दिर में महाराज ।
 कवि सम्राट गोस्वामि जा, करे जै जै जा आवाज ॥
 मथे वेठो गोस्वामि हो, हेठि वेठो रघुवीरु ।
 पूजारीअ खां प्रीति सां, पुछिया मालिक मीर ॥
 गोस्वामि सेवकु रघुनाथ जो, कीअँ मथे विहारियो ।
 चयाई अजा मथे विहारण जो, अथमि ध्यानु धारियो ॥
 सतिगुरु साहिब खां वदो श्री रामायणु गाए ।
 सतिगुर जी महिमा मिठी, पाण साहिबु साराहे ॥

प्रीति दिसी पूजारीअ जी, थियो गद् गद् गुण निधानु ।
 धन्यु सन्त तुहिंजी सिकिड़ी, सचो ज़ातुइ शानु ॥
 पोइ अडणि आयुमि अलबेलड़ो, सरसरि करे स्नानु ।
 भगत भेषु भगुवानु, साईं साहिबु सिन्धु जो ॥

○ ● ○ ● ○ ● ○